ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

# स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान

**प्रा. देविदास गणेशराव येळणे**

*हिंदी विभाग, नेताजी सुभाषचंद्र बोस महाविद्यालय,*

*नांदेड*

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में लेखकों ने संतों ने महात्माओं और समाज सुधारकों ने जो योगदान दिया है उसको ध्यान में तो रखा है, पर खेद है कि पत्रकारों की महान सेवाओं का मूल्यांकन नहीं किया | उनकी पत्रकारिता में युगबोध और अपने महत दायित्व के प्रति पूर्ण सजगता है | बौद्धिक स्तर पर स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख नेता पत्रकार थे | स्वाधीनता आंदोलन की सफलता में पत्र- पत्रिकाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई | उनके सामायिक लेख, विचारोत्तेजक टिप्पणियाँ तथा नविन प्रेरक नारों ने देश का मार्गदर्शन किया | स्वाधीनता आंदोलन में सतत संघर्षरत रहकर उसके सेनानियों ने संघठित शक्ति का संचार किया | इसलिए हमारी दृष्टि में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास तब तक अधुरा रहेगा जब तक इस दिशा में सक्रिय पत्रकारों का महत्वांकन नहीं किया जाता | यह सही है की महात्मा गांधी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पंडित जवारलाल नेहरु, लाला लजपतराय आदि नेताओं ने स्वतंत्रता के लिए ऐतिहासिक कार्य किये, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए की वे सभी नेता पत्रकार भी थे,डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार- "स्वतंत्रता आन्दोलन के मुख्य पात्र पत्रकार ही थे|" उस समय देश में शायद ही कोई ऐसा नेता हो, जिसने किसी न किसी पत्र का संचालन न किया हो | इन नेताओं ने भी स्वाधीनता प्राप्ति में पत्रकारिता को सर्वाधिक सबल माध्यम समझा | इस तरह स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में इनका उल्लेख अनिवार्य है | लेकिन इन राष्ट्रीय नेताओं के साथ राष्ट्रवादी पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका का भी उल्लेख होना चाहिए | भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प. केशवराम भट्ट, प. प्रतापनारायण मिश्र, प. मदनमोहन मालवीय, प. दुर्गाप्रसाद मिश्र, प. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, बाबुराम विष्णु पराड़कर, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि पत्रकारों ने राष्ट्र की महिमा को सर्वोपरि समझा और उसके समक्ष वयक्तिक स्वार्थ को ठोकर मार दी | उन्हें भी सरकार की मार सहनी पड़ी, कुछ को जेल- यातनाएँ भी सहनी पड़ी, पर मातृभूमि की सेवा में मर मिटने वाले पत्रकारों ने कभी उफ़ तक न की | उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध करने और उसे स्वाधीनता आन्दोलन से जोड़ने का सक्रिय प्रयास किया | लेकिन दुर्भाग्यवश इस महत्वपूर्ण तथ्य की और इतिहासकारों ने ध्यान नहीं दिया |

**Copyright © 2024 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

महात्मा गांधी ने जिस स्वदेशी आन्दोलन पर बल दिया, उसकी भूमिका पहले ही तैयार हो चुकी थी | यह प्रक्रिया भारतेन्दु युग से ही शुरू हो गई थी | भारतेन्दु ने गांधी से बहुत पहले स्वदेशी आंदोलन का सूत्रपात किया था और तदीय समाज की स्थापना की थी | इसी क्रम में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया | आज जिस नारी जागरण की बात की जाती है और महात्मा गांधी ने जिस नारी-जागरण का अभियान चलाया था उसके प्रथम दर्शन ‘कविवचन सुधा’ ‘ हिंदी प्रदीप’ ‘ बिहारी बंधु’ के पृष्ठों पर होते थे | देश की स्वतंत्रता के जिस सपनों को संजोकर भारतेन्दु युगीन पत्रकारों ने जो प्रयास किये, उसका ऐतिहासिक महत्व है | उनकी मूल धारा राष्ट्रीय और जनवादी थी | वे पत्र-पत्रिकाओं में युग का विश्लेषण कर भविष्य के निर्माण के लिए सचेत रहें | समाज को सत्य और आदर्श की नीवं पर प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति और साहित्य का आधार ग्रहण किया | लेकिन उसके अंधानुकरण में उनकी आस्था नहीं थी | इस कारण उन्होंने अपनी दृष्टि को नवीनता से समन्वित किया | समाज की दुर्दशा में सुधार और विदेशी शासन से मुक्ति ये उनके दो लक्ष्य थे | सर्वप्रथम पत्रकारों ने ही शासन में स्वाधीनता का प्रश्न उठाया | लेकिन उनकी अपनी सीमाएँ भी थी | वे अपनी आवाज देश के गावों तक नहीं पंहुचा सके, क्योंकि शिक्षा के अभाव में किसानों और मजदूरों को उनकी पत्र- पत्रिकाएँ जागृत नहीं कर सकी थी | यह कार्य महात्मा गांधी जैसे राजनेताओं द्वारा सम्पन्न हुआ | इस दृष्टि से उन नेताओं की महत्ता अक्षुणा है लेकिन वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत पत्रकारों को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए | प्रस्तुत लेख में इसी अभाव को दूर कर पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता का परिचय दिया गया है| हमारा विस्वास है की प्रारंभिक स्वाधीनता के बिखरे बीज तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों में ही ढूंढे जा सकते है | इस खोज के लिए विद्वान साहित्य पर भी दृष्टि डालते है | बहुत हद तक साहित्य इतिहास- लेखन में सहायक भी होता है, लेकिन वह इस काम में पृष्ठाधार का कार्य करता है | उसमे सामयिकता का स्पर्श भी रहता है, उसकी बहुलता से साहित्य की विशिष्ठता एक अंश तक खंडित हो जाती है | लेकिन पत्रकारिता के साथ यह सीमा नहीं | यहाँ तो सामायिक जीवन ही प्रधान होता है | इसलिए हमारी धारणा है की स्वतंत्रता के इतिहास- लेखन में पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग भी सहायक होगा |

स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास की शुरवात भारतेन्दु युग से हुई, क्योंकि राष्ट्रीय चेतना का श्री गणेशा उसी युग में हुआ था | स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि के रूप में उस युग की पत्रकारिता ने मुख्य भूमिका निभाई थी | उनके प्रयास से देश हर दृष्टि से जागृत हो रहा था, स्वदेशी के प्रति आग्रह बढ़ रहा था और स्वराज्य का अर्थ स्पष्ट हो रहा था | उस समय देश का नेतृत्व एक प्रकार से नेताओं की अपेक्षा पत्रकारों के हाथ में था | वस्तुत : इसी पृष्ठभूमि पर बीसवी

सदी के पत्रकारों और राजनेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम को और भी तेज किया | अब पत्रकारिता राष्ट्रीय चेतना से सीधे संपृक्त हो गयी | यहाँ यह ध्यातव्य है कि राजा राममोहन राय से लेकर डॉ. राममोहन लोहिया तक भारतीय स्वतंत्रता के हिमायती रहें है | इसी प्रकार भारतेन्दु से लेकर प. बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे पत्रकार स्वतंत्रता के समर्थक रहे है | राजनीति, साहित्य और पत्रकारिता ये तीनो घुले- मिले थे | इस शताब्ती के प्रारंभ में ही राष्ट्रवाद की प्रवृति बढ़ने लगी, जिसकी अभिव्यक्ति 1905 ई. में बंगाल- विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन के रूप में हुई | प्रारंभिक दिनों में राष्ट्रीय आंदोलन ने बड़ी संख्या में लोगों को उतरोत्तर विदेशी दुष्प्रभाव से मुक्त करने तथा देश- भक्ति को बढावा देने के लिए जागरूक किया था | उसने शिक्षित भारतीयों को राजनीतिक प्रशिक्षण दिया | इसका परिणाम यह हुआ कि बीसवी शताब्दी में राष्ट्रीय स्तर काफी बुलंद हो गया | इस सदी के प्रारंभिक दो दशक राष्ट्रप्रेमियों के तीव्र असंतोष, जन आन्दोलन, स्वदेशानुराग, राजनीतिक अशांति, स्वभाषा प्रेम के विकास की अवधि है | विदेशी बहिष्कार और स्वदेशी प्रचार आन्दोलन को अपेक्षित दिशा- निर्देश करनेवाले महापुरुषों का भारत के राजनीतिक मंच पर उदय हुआ | उन दिनों बाल, पाल और लाल भारतीय राजनीति का नेतृत्व कर रहे थे | हिंदी पत्रकारिता का यह द्विवेदी युग था, जो अपनी कट्टर राष्ट्रीयता के लिए प्रसिद्ध है | उस युग में भी अनेक तेजस्वी पत्रकार हुए, जिन्होंने पत्रकारिता को देश- सेवा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम समझा | बाल मुकुंद गुप्त, प. महावीरप्रसाद द्विवेदी, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, बाबुराव विष्णु पराड़कर आदि उसी युग के पत्रकार थे | हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास के साथ स्वदेशी आंदोलन और स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति में इन पत्रकारों ने अविस्मरणीय कार्य किये |

गांधी युग की पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम को उत्कर्ष पर पहुँचा दिया | ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दमन जितना ही बढ़ा, पत्रकारों की लड़ाई भी उतनी ही प्रखर होती गई | 'अभ्युदय', 'प्रताप', 'विशालभारत', 'देश', 'स्वदेश' आदि पत्रों ने असहयोग आन्दोलन, चोरी- चोरी कांड, साइमन कमीशन, नेहरु रिपोर्ट, भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी राजनीतिक गतिविधियों को उद्दीप्त किया | भूमिगत क्रांतिकारियों की तरह 'रंगाभेरी', 'शंखनाद', 'बोल दे धाबा' जैसे भूमिगत पत्रों का भी प्रकाशन हुआ | यहाँ तक की 'सरस्वती', 'हिमालय', 'माधुरी', चाँद जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं ने भी स्वाधीनता समर्थन में अनेक क्रांतिकारी रचनाएँ प्रकाशित कर आन्दोलन में योगदान दिया|

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है इस मंत्र को लेकर पत्रकारिता आगे बढ़ी | पत्र-पत्रिकाओं की राय थी की स्वतंत्रता की भीख माँगने या खुशामद करने से नहीं मिलती उसे आत्मनिषेध, त्याग और बलिदान से ही पाया जा सकता है | क्रांतिकारी पत्रों का इतना प्रभाव था की धार्मिक और

जातीय पत्रों में भी परतंत्रता पाश को चिन्न-भिन्न करने के लिए प्रयास किये गये | उनका लक्ष्य धार्मिक और जातीय नवोत्थान के साथ राष्ट्रीय भी था | इस प्रकार परतंत्र भारत की सभी पत्र- पत्रिकाओं का प्रकाशन स्वाधीनता आंदोलन का अंग था |

लेकिन यह कार्य इतना आसान नहीं था | इस दिशा में कदम-कदम पर बाधाएँ थी | पत्रकारों को एक और सरकारी दमन-नीति से लड़ना पड़ा, दूसरी और आर्थिक कठिनाईयों से भी जूझना पड़ा | सीमित साधनों और ऊँचे लक्ष्य के बीच संघर्ष था | पत्र निकलते थे, बंद होते थे | उस विषम परिस्थिति में वे ही पत्र टिक पाते थे, जिनको किसी राजा- रईस का संरक्षण प्राप्त था | लेकिन यह विरल संयोग बहुत कम पत्रों को मिलता था | ऐसी स्थिति में सारा दायित्व अकेले संपादक पर था | हम देखते है की उक्त कठिनाईयों के बावजूद पत्रकार अपने गंतव्य की ओर अग्रेसर रहे | हानि-लाभ की परवाह किये बिना राष्ट्रीयता के बढते कदम का साथ देना वे अपना पुनीत कर्तव्य मानते थे | कभी-कभी आर्थिक दबाव इतना अधिक हो जाता था, जिससे थोड़ी देर के लिए उनका उत्साह धीमा पड जाता था, पर उनसे वे घबराते नहीं थे | उनसे लड़ने का पत्रकारों में साहस था | इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता का विकास विरोध, क्षत्रुता ओर दमन का साहसपूर्वक सामना करते रहने में हुआ है | पत्रकारों के समक्ष समस्याएँ उत्पन कर दी गई, उनसे जूझना उनका राष्ट्रीय कर्तव्य हो गया | उधर सरकार समय-समय पर प्रेस कानून पारित कर हिंदी पत्रकारिता की बाढ को नियंत्रित करती रही | वारेन हेस्टिंग्ज के शासन काल से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक के बीच अनेक प्रेस कानून पारित किये गये | लार्ड लिटन का वर्नाक्लुलर प्रेस एक्ट इस दिशा में सर्वाधिक कठोर कानून था | ‘बिहारबंधु’, भारतमित्र’, ‘हिंदी प्रदीप’, ‘उचित वक्ता’ जैसे पत्रों ने उस कानून का विरोध किया | कानून उल्लंघन के आरोप में पत्रों के अंक जप्त किये गये, प्रेस पर नोटिस जारी की गयी और संपादकों से जमानते मांगी गई, उन्हें जेल यातनाएँ भी दी गयी | फिर भी पत्रकार अपनी शक्ति ओर उत्साह के बल पर पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना अभिव्यक्त करते रहे | पत्रकारों को यह सही नहीं लग रहा था कि हिंदी उर्दू और अंग्रेजी पत्रों के साथ भेदभाव की नीति बढती जाय | लेकिन हिंदी पत्र जरा भी मुँह खोलते, उसे बगावत का नाम दे दिया जाता, डॉ. अमरेन्द्र कुमार के अनुसार- “आजादी की लड़ाई में हिंदी और उर्दू पत्रकारिता ने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया|” अत : सरकार को पत्रकारों के दृढ़ संकल्प के समक्ष झुकना पड़ा | उनके आन्दोलन का परिणाम था कि रिपन और बैटिक जैसे उदार वाईसराय नियुक्त हुए और उन लोगों ने बड़ी चतुराई से क़ानूनी दबाव को कम कर पत्रों का विस्वास प्राप्त किया |

स्वाधीनता के लिए हिंदी पत्रकारों ने संघठनात्मक और आंदोलनात्मक रवैया अपनाया | उन्होंने देखा कि अंग्रेजी सत्ता से जूझने के लिए उन्हें एकजुट होना पड़ेगा | स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान कांग्रेस अधिवेशनों की तरह कई संपादक सम्मेलनों और पत्रकार अधिवेशनों का आयोजन

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

किया गया | एक मंच पर एक जुट होकर पत्रकारों ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठायी थी | उस समय के पत्रकार संघठनो में प्रयाग हिंदी समाज, संपादक समिति, प्रेस असोसिएशन, अखिल भारतीय पत्रकार संघ आदि प्रमुख थे | इन संघठनों ने वृदावन, भरतपुर, गोरखपुर, इन्दोर, दिल्ली, कलकत्ता, लाहौर आदि स्थानों पर अधिवेशन किये और स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रतिज्ञा की | जब-जब उनके और देश हित के विरुद्ध सरकार ने कोई नया कदम उठाया सबके सब एक स्वर से उस पर टूट पड़े | डॉ. मीरा रानी बल के अनुसार- “भारतीय पत्रकारिता का इतिहास ऐसे सशक्त राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के अद्भुत साहसिक दृष्टान्तों से भरा हुआ है जिन्होनें ब्रिटिश शक्ति को अपने तेजस और दीप्ती से निस्तेज कर दिया था|”

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि राजनेताओं की तरह पत्रकार सैनिकों ने भी स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्योंछावर कर दिया | पाठकों की कमी, आर्थिक संकट एवं विविध प्रतिरोधों का सामना करते हुए भी हिंदी पत्रकारों ने पत्रों का संचालन, प्रकाशन और संपादन जारी रखा, जिससे स्वाधीनता आन्दोलन को बड़ा बल मिल गया | हमारी धारणा है कि देश को जो जल्दी आजादी मिली, वह पत्रकारिता के बलबूते पर ही | महात्मा गांधी को इस कार्य में जो सफलता मिली वह संभवत: पत्रकारिता से सहयोग के अभाव में नहीं मिलती, यदि मिलती भी तो इसमें कुछ समय और लगता | इसलिए हम कहना चाहते है की भारतीय स्वाधीनता के इतिहास का पुनर्लेखन पत्रकारिता के आधार पर किया जाना चाहिए और इस नये इतिहास में पत्रकारों के बलिदान का मूल्यांकन किया जाए |

**सन्दर्भ सूचि :**

1. डॉ. अर्जुन तिवारी, स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, प्रथम संस्करण 1982, पृष्ठ संख्या, 13
2. अमरेन्द्र कुमार, इक्कीसवी सदी और हिंदी पत्रकारिता, सामयिक प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001, पृष्ठ संख्या, 41
3. डॉ. मीरा रानी बल, राष्ट्रीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन,दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1994, पृष्ठ संख्या, 63

*Cite This Article:*

**प्रा. येळणे द. ग. (2024).** *स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 17–21) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646485